

सदगुरु वन्दना

सच्चिदानन्द स्वरूप हैं, मम आराध्य भगवान ।
बार बार वन्दन करूँ, युक्ति भेद रत ज्ञान ॥ १/१/४

बन्दौ मैं वह परम गुरु, जिन यह ज्ञान पसार ।
देव 'सदफाल' आदि में, जिन यह शब्द उचार ॥ ४/१/५०

परम पुरुष की वन्दना, अन्तर्यामी देव ।
अखिल विश्व ब्रह्माण्ड का, संचालक मम देव ॥ ४/१४/१५

प्रथम भक्ति गुरुदेव कि, मन वच काया साध ।
सहज ज्ञान वैराग है, सब गुण साधन साध ॥ ६/१/१

बार बार वन्दन करूँ, सदगुरु देव हमार ।
यहाँ वहाँ सब ठाम मे, महिमा अपरमपार ॥ ६/२/४

शरण शरण मैं शरण हूँ, हे गुरु बन्दीछोर ।
मोहि उबारो हे गुरो, यह सौ बार निहोर ॥ ४/१३/१७

जन अधीन वन्दन करे, केहि विधि कीजे सेव ।
वार पार की गम नहीं, नमो नमो गुरुदेव ॥ ४/१३/१८

सदगुरु आदेश

मम सदगुरु आदेश है, सत्य करो उपदेश ।
भला बुरा जग मानई, सन्त चले निज देश ॥ १/१/१८

वैराग्य

मना क्षणिक वैराग ले, चढ़े उत्तुङ्ग अकाश ।
तुरत राग में गिरत है, सदगुरु जीव विनाश ॥ १/१/२७

कुल कुटुम्ब-परिवार सब, पुत्र नारि सुख सार ।
कोइ काहू के है नहीं, यह सब मतलब यार ॥ ४/६/१५

बिना ज्ञान वैराग के, प्रभु से मिलन न होय ।
जग बन्धन छूटे नहीं, जनम मरण दुख होय ॥ १/३/३१

प्रभु प्राप्ति (जीवन का लक्ष्य)

सब तत्वों का ज्ञान है, परम पुरुष विज्ञान ।
सहज योग अभ्यास है, डोर विहंगम जान ॥ १/१/१३

लक्ष्य बनाओ प्रभु मिलन, जीवन का उद्देश्य ।
प्रभु प्राप्ति सब मिलन है, नाश अमिल जग वेश ॥ १/४/३४

मानव उत्तम देह को, पाकर लक्ष्य न जान ।
हीन मुख्य उद्देश्य से, सो दुख जीवन मान ॥ ५/११/३७

बन्धन, दुख, दुर्गुण

कर्मन की अज्ञान की, जड़ चेतन की ग्रन्थि ।
बन्धन में सब जीव है, तिन प्रकार की ग्रन्थि ॥ १/६/४२

आत्महिं स्त्री पुरुष है, आत्म नपुंसक जान ।
आतम अपने कर्म वश, विविध देह निर्मान ॥ २/४/९

कामी में दुर्गुण बसे, सद्गुण आवे नाहि ।
अधिकारी नहिं भक्ति का, जन्म मरण दुख पाहि ॥ ३/९/४

तीन लोक की सम्पदा, आय वसे घर माहि ।
तबहूँ मन शीतल नहीं, अवर मिलन मन माहि ॥ ३/९/११

योग, धारणा, ध्यान, समाधि, ब्रह्मविद्या, विविध योग

मन बाँधे सो धारणा, शब्दाकार सो ध्यान ।
शब्द स्वरूप समाधि है, परम तत्व विज्ञान ॥ २/१०/३१

योग योग सब कोइ कहे, योग न जाना कोय ।
अर्ध धार उरध चले, योग कहावे सोय ॥ ४/२/७

योग कहत हैं जोड़ को, योग कहत है सन्धि ।
योग रहस्य उपाय में, जीव ब्रह्म की सन्धि ॥ ४/२/११

ब्रह्मविद्या चिनगी उड़ी, लगी कर्म घर आग ।
कर्म वासना जर गई, चेतन चेतन जाग ॥ ४/१/१०

सिद्धि विभूती चाहते, जग से चाहत मान ।
अन्ध योग क्या करि सके, यह यम के मेहमान ॥ ५/१/३४

अनुयायी सब धर्म के, पढ़त ग्रन्थ मत वात ।
क्षरत वर्ण प्रज्ञा बनी, प्रकृति धार वह जात ॥ ५/८/५४

मुद्रा प्राणायाम सब, बन्ध करे नहीं सन्त ।
गुरु प्रसाद फूले कमल, सन्त मता पर अन्त ॥ १/१/४९

बाहर बाहर खोजते, अन्तर की सुधि नहीं ।
बिनु सदगुरु पावो नहीं, भटकि मरो जग माहि ॥ ५/१/३१

मन ही मन में धारणा, मन ही मन में ध्यान ।
मन ही मना समाधि है, यह धोखा भ्रम जान ॥ २/१०/६८

इंगला पिंगला सुष्मना, योग युक्ति सम कीन ।
नाक पृष्ठ मैं आरुहम, स्वर व धाम सुख लीन ॥ १/३/१०

योग युक्ति से सर्पिणी, सुषमन मुख टल जाय ।
उर्ध्व द्वार नभ का खुले, सुषमन तार समाय ॥ १/३/१६

पञ्चक्षिती है योग की, एक जन्म नहीं पाय ।
कोड़ कोड़ गुरु के लाल हैं, अंतिम क्षिति पर जाय ॥ २/३/१६

प्रथम द्वितीय कोड़ तृतीय में, क्षिति चतुर्थ कोड़ पाय ।
धिर वीर गुरु हैंस जो, अन्त महल पर जाय ॥ २/३/१७

योग अनेकों बन गये, यह मनमथ परपञ्च ।
योग एक प्रभु मिलन का, और योग नहीं रञ्च ॥ ५/१/८

नव द्वार संसार का, दशवाँ योगी तार ।
एकादश खिरकी बनी, शब्दमहल सुख सार ॥ ६/३/२

आसन है तन शान्ति को, मन शान्ति अभ्यास ।
अनुभव आतम शान्ति को, जाहि छुटै अध्यास ॥ ६/६/११

धोखा प्राणायाम है, धोखा सारे योग ।
धोखा कर्म विडम्बना, धोखा अणिमा भोग ॥ ६/६/२०५

तन आसन हठ योगी मानें, मन आसन कोड़ विरला जानें
आतम आसन अद्भुत केला, है रहस्य अन्तर गम मेला ॥
अक्षर आसन शब्द सनेही, शब्द अखण्ड खण्ड यह देही ॥
६/३/३/ सो०, २/१

कुम्भक बन्ध न एको लागे, आपहि आप कुण्डली जागे ॥
नित अनादि गुरु योग हमारा, चारों युग महँ रह परचारा ॥
खुले सुष्मना दशवाँ द्वारा, गगन महल में भय पैठारा ॥
६/३/३ सो०, २/७

जप तप ज्ञान यज्ञ व्रत पूजा, सद्गुरु भक्त करम नहि दूजा
सर्व साधना त्याग विवेका, गुरु की भक्ति निरन्तर एका ॥
६/१/४/६

आत्मा, छः देह, छः अवस्थाएँ

षोडश सूर्य प्रकाश है, सच्चिदानन्द स्वरूप ।
आतम अलग आधार में, तन्मय पुरुष अनूप ॥ २/८/१९

थूल सूक्ष्म कारण बना, मह कारण से एह ।
केवल हैंस स्वरूप है, यह षट जानो देह ॥ २/८/१७

उत्तपन्न रज वीर्य से, अन जल वायू पाल ।
षट विकार अस्थूल मर, जरा युवा तन वाल ॥
(स्थूल शरीर) २/८/२४

पञ्च प्राण दश इन्द्रियाँ, अन्तःकरण मिलाय ।
यह तो सुक्ष्म देह है, ओनईस तत्व समाय ॥
(सुक्ष्म शरीर) २/८/२३

जड़ चेतन संयोग में, माया जीव सम्बन्ध ।
यौगिक कारण देह है, जड़ फन्दा जिव बन्ध ॥
(कारण शरीर) २/८/२२

अर्ध ज्ञान संकल्प दृढ़, दृश्य भोग जड़ होय ।
पतन महाकारण बना, भय हँस सचिद सोय ॥
(महाकारण शरीर) २/८/२१

ब्रह्मास्मि भ्रम उदय में, अहंभाव बन आय ।
केवल देह सो जानिये, पतन मूल भ्रम पाय ॥
(कैवल्य शरीर) २/८/२०

तुरिया तुरियातीत है, आप्त महा पद जान ।
जाग्रित स्वप्न सुषोपती, षट व अवस्था मान ॥ २/८/२५

पञ्च विषय पंच इन्द्रिया, होय यथार्थ ज्ञान ।
जाग्रित ताको जानिये, प्रथम अवस्था मान ॥
(जाग्रित अवस्था) २/८/२६

जाग्रित के परपञ्च की, स्मृति होय जेहि काल ।
स्वप्न अवस्था अन्यथा, दृश्य अनेक हवाल ॥
(स्वप्न अवस्था) २/८/२७

अन्तः करण विलीन है, त्याग सकल व्यवहार ।
ज्ञान घोरतम छाड़या, भाव सुषोप्ति विचार ॥
(सुषोप्ति अवस्था) २/८/३०

जड़ चेतन ग्रन्थी खुली, चेतन होय असंग ।
आप आप पहिचानिया, तुरिया ज्ञान अभंग ॥
(तुरिया अवस्था) २/८/३४

निज स्वरूप के अन्तरे, अनुभव शब्द प्रकाश ।
दशो दिशा परिपूर्ण है, तुरियातीत विकाश ॥
(तुरियातीत अवस्था) २/८/३५

शब्द अखण्ड समाधि है, सच्चिदानन्द स्वरूप ।
सर्व ज्ञान परत्यक्ष है, आप्त अवस्था रूप ॥
(आप्त अवस्था) २/८/३६

जाग्रित है अस्थूल में, स्वप्न है सुक्ष्म माहिं ।
कारण देह सुषोप्ति है, रूप तीन तिन माहिं ॥ २/८/४४

महाकारण तुरिया रहे, केवल तुरियातीत ।
हँस देह में आप्त है, अनुभव शब्द प्रतीत ॥ २/८/४५

इन्द्रि अश्व अरु मन रजू, बुद्धि सारथी जान ।
आत्मरथी रथ देह है, त्रिगुण भाव पथ ज्ञान ॥ ५/१०/९

हँस हँसिनी शुद्ध हैं, दीजे तत्व लखाय ।
भूमण्डल परचार है, छान बीन सब आय ॥ ६/१/८

प्रलय

जिव अनन्त सत्ता रहे, जीवन कर्म अनन्त ।
पृथक पृथक एक पाद में, व्यक्त विभक्त अनन्त ॥ ५/११/१८

जीव ब्रह्म मीले नहीं, जीव सनातन रूप ।
कर्म वासना साथ वह, फिर आवे भवकूप ॥ ५/११/२०

सद्गुरु दया, प्रभु दया

योग क्षेम प्रभु सब करें, भक्त अन्य नहिं आश ।
आत्म समर्पित भक्त है, भक्त हृदय प्रभु वास ॥ १/३/५४

सद्गुरु सुकृतदेव जी, सदा रहें मम साथ ।
मुझ चिन्ता किस काम का, जा पर प्रभु कर हाथ ॥ १/४/२२

सद्गुरु आभा लागते, होय काक से हँस ।
जीवन मरण सुधार कर, अमर भये सोइ वंश ॥ ४/१३/३१

चारो फल गुरु चरण में, चाह अमित फल पाय ।
सद्गुरु जन रक्षा करें, सर्व ठाम जस आय ॥ ६/१/३

सद्गुरु पद की प्राप्ति

उनईस सौ है बानबे, माघ कृष्ण है पक्ष ।
सद्गुरु मोहि अपनाइया, निज मत कर गये दक्ष ॥ १/६/२२

उत्तम शिष्य

उत्तम अधिकारी मिले, सारशब्द उपदेश ।
सद्गुरु सैन लखावहीं, नहीं भाषण आदेश ॥ १/३/५८

ईश्वर गुरु भय मानते, अभय होय संसार ।
सो नर गुरु का लाल है, सकल लक्ष्य कर पार ॥ ३/२/३२

शिष्य श्वान गुरुदेव का, दुर दुर तू तू भाव ।
मृतक बनो मन मारि कर, शुद्ध हँस गति पाव ॥ ४/१३/२८

मैं उत्तम ऐसा बनू, जैसा होय न कोय ।
नहीं भूत वर्तमान में, नहीं भविष्य जग होय ॥ २/४/२०

दुर्लभ यह सत्मार्ग को, भाग्यवान नर पाय ।
सेवा जित प्रिय शिष्य में, यह अनुभव गति आय ॥ १/७/८

दुर्लभ मार्ग

कशा असीम समुद्र का, मीन करोड़ों माहिं ।
लाल गुरु कोइ एक है, दुर्लभ है जग माहिं ॥ १/४/२३

दुर्लभ सद्गुरु पन्थ है, भाग्यवान नर पाय ।
देव सदाफल हरि कृपा, तब अमरापुर जाय ॥ ३/६/३४

तीन लोक की सम्पदा, एक श्वाँस सम नाहिं ।
हीरा समय अमूल्य है, हरि सुमिरन के माहिं ॥ ४/६/४७

जिवनमुक्त योगि

काल चक्र से पृथक रह, काल चक्र को देख ।
वीतराग वह पुरुष है, जिवनमुक्ति पर पेख ॥ १/१/६८

काल, माया

काल चक्र संसार का, सदा चले दिन रात ।
जीव मोह अज्ञान में, अन्ध काल बह जात ॥ १/४/२४

नित्य पले पल निगलता, काल बली संसार ।
कालक मुख मै जा रहा, श्वाँस उश्वाँस विचार ॥ २/७/३१

भजन

रात दिवस एक तार में, रहे निरंतर लाग ।
वे पलभर विछुड़े नहीं, भजन विरह अनुराग ॥ १/२/११

चलत फिरत बैठत उठत, लगन में सुरति सम्हार ।
धन्य संयमी सन्त है, पावे जग करतार ॥ १/२/१२

मना मनन जब तक रहे, तब तक भजन न जान ।
अमन अगम अनुभव चले, भजन सत्य परमान ॥ १/३/५३

मन

मन पर विजयी होय कर, ब्रह्म प्राप्ति कर सन्त ।
मन वांछित फल वे मिले, नर जीवन कर अन्त ॥ १/२/२२

प्रभु प्रसाद सद्गुरु दया, मना होय स्वाधीन ।
अन्य युक्ति कोइ नहीं लगे, सद्गुरु चरण अधीन ॥ १/२/२३

अक्षर मन का योनि है, अक्षर से मन होय ।
पञ्चभूत से मन नहीं, यह तत्व समझे कोय ॥ १/६/४

नेत्र अग्र मन वास है, जागृत मे जग ज्ञान ।
मन मध्यम परमाण में, स्वप्न कण्ठ स्थान ॥ २/७/३६

मन को रोको विषय से, जो नहीं माने हार ।
तब रोको निज देह को, मनमथ मारे विचार ॥ २/२/५५

मन के मण्डल बैठकर, खोजें ब्रह्म अनूप ।
प्रकटे मन वहि रूप में, विविध कलामय रूप ॥ ५/१/२३

धर्माधर्महिं मनहिं है, स्वर्ग नर्क मन जान ।
बद्ध मुक्त भ्रम मनहिं है, मनहिं शत्रु अज्ञान ॥ ६/६/१३७

मन माया मरती नहीं, नहीं वासना नाश ।
यह शरीर मरि-मरि गया, कर माया मन नाश ॥ १/३/३२

समर्पण

मै अपने को आप में, करत समर्पण पाहि ।
रखें जहाँ तहवाँ रहूँ, करे करावै ताहि ॥ १/४/४८

ब्रह्मवेत्ता दरबार में, बैठो सज्जन होय ।
गो मन अङ्ग सम्हार कर, वाणी चपल न होय ॥ १/५/२५

अक्षर

अक्षर से सब सृष्टि है, परम पुरुष है न्यार ।
पुरुष से अक्षर होत है, पुरुष परम करतार ॥ १/७/५

अक्षर चेतन नित्य है, प्रकट गुप्त दो रूप ।
सृष्टि प्रलय जग ताहि से, ता पर शब्द अनूप ॥ ५/९/१

सेवा, भक्ति, सत्संग

सुमिरन से सब दुख गये, सुमिरन से सुख होय ।
सुमिरन से सब कामना, पूरण सुमिरन सोय ॥ ४/८/२३

जिसका दृढ़ संकल्प नहीं, उसका दृढ़ नहीं काज ।
वह कुछ कर सकता नहीं, हाथ से जाय स्वराज ॥ ५/४/४७

धन काया मन वचन से, सन्त परम गुरु सेव ।
आरत दीन अधीन हो, अनुगामी गुरुदेव ॥ ५/५/१

सेवाजीत उर्त्तीण को, विश्व अलभ्य न होय ।
मुक्ति ताहि पीछे फिरे, सदगुरु सेवक सोय ॥ ५/५/७

ब्रह्मविद्या परचार का, सदगुरु का जग काम ।
करे करावे ताहि को, सोइ सेवा शिष नाम ॥ ५/५/१९

सेवा धर्म समान जग, अन्य धर्म नहीं कोय ।
सदगुरु सेवक सुलभ सब, कोई अलभ्य नहीं होय ५/८/२०

जहाँ क्षात्रबल नीतिबल, विद्याबल वेकाम ।
कुण्ठित सारी शक्ति है, वहाँ सेवा कर काम ॥ ५/५/२४

सेवाहिन जिज्ञासु से, प्रश्नोत्तर नहीं होय ।
मर्यादा आचार्य की, अन्ध प्रथा जग होय ॥ ५/५/२६

सदाचार व्यभिचार से, मूर्ख से विद्वान ।
भोगी से योगी बने, फल सत्संग महान ॥ ५/५/५५

सेवा सदगुरु हरि भजन, अरु सत्संग विचार ।
यह संयम नित कीजिये, तीन सार संसार ॥ ५/१८/१९

शब्द

रंकार ओंकार है, सोहं शक्ती जान ।
एक निरञ्जन शब्द है, पांच शब्द यह मान ॥ १/७/४३

ब्रह्मवेत्ता वह जानते, वाणी चार स्वरूप ।
तीन रूप अन्तर गुहा, चौथा बाहर रूप ॥ २/३/५४

सृष्टि पूर्व में शब्द था, शब्द से शब्द प्रकाश ।
वे परब्रह्म से ब्रह्म है, ब्रह्म से सृष्टि विकाश ॥ ५/११/३

सारशब्द

सारशब्द चिन्तन किये, ज्ञान वृद्धि आनन्द ।
याते निशि दिन चिन्तिये, मिले सच्चिदानन्द ॥ १/८/१७

गूंगा केरी सैन को, गूंगा ही पहिचान ।
गूंगा अपने स्वप्न को, कैसे करे वखान ॥ १/१०/४५

तीनलोक के बाहरे, शून्य अरषठ के पार ।
देव सदाफल महल है, परम पुरुष दरवार ॥ १/१०/४७

अगुण सगुण दोऊ जीव है, पुरुष दोनो से न्यार ।
निर्गुण मन तन सगुण है, निज स्वरूप इन पार ॥ २/६/३७

विन देखे उस देश को, मिथ्या करत विवाद ।
अनुभव में अनुभव दिखे, तब कथनी कर स्वाद ॥ ३/७/१६

नव द्वारा को बन्दकर, खोलो दसवा द्वार ।
खिरकी एकादश खुली, अग्र पुरुष दरबार ॥ ४/८/३०

नित्य अनादि सद्गुरु, सद्गुरु

चरों युग में प्रकट हो, सार शब्द उपदेश ।
करे मुक्ति जग जीव की, पहुँचे अपने देश ॥ १/९/२६

सद्गुरु प्रभु सम जानिये, मन में भेद न कोय ।
नीच मूढ़ वे अधम हैं, नर सम जानत सोय ॥ २/४/६७

ग्रन्थ रचे अध्यात्म का, जो सद्गुरु पद पाय ।
देव सदाफल भ्रम में, रच जगजीव नशाय ॥ २/५/३९

परम पुरुष आज्ञा चलै, चारो युग संसार ।
प्रकट भेद उपदेश है, अज सद्गुरु तत सार ॥ २/९/१

प्रलय सृष्टि मुक्ती रहै, सब दिन एक समान ।
कर्म कीच में नहीं पड़े, हँसन मुक्ति निदान ॥ २/८/३

माया लोक छोड़ाय कर, चेतन लोक निवास ।
सद्गुरु ताको जानिये, भक्ति मुक्ति तेहि पास ॥ २/९/८

देवन में गुरुदेव हैं, मुल पूजा गुरुदेव ।
गुणावाद गुरु ध्यान है, वर सेवा गुरु सेव ॥ ४/८/७०

सुख शान्ति सबको मिलै, यह उपदेश हमार ।
सारा विश्व हमार है, हम हैं सब संसार ॥ ४/१०/४१

गुरु महिमा को कहि सके, थकित शारदा शेष ।
देव सदाफल गुरु कृपा, पावे पद अवशेष ॥ ४/१०/५०

अण्ड मण्डलाकार हैं, व्यापक विश्व महान ।
सो सद्गुरु का रूप है, अनुभव में पहिचान ॥ ४/१३/२१

गुरु सान में सान है, गुरु मान में मान ।
गुरु ज्ञान में ज्ञान है, सुयश करो गुरु गान ॥ ४/१३/२५

अमित काल से भूलिया, पहुँचा अपने देश ।
देव सदाफल क्या कहें, परमानन्द सन्देश ॥ ५/७/२६

सद्गुरु प्रभु कुछ नहीं भेदा, सद्गुरु सुमिरि मिटहि सब खेदा
॥ ६/१/३/१

सद्गुरु में आकर्षण भारी, जीव मुमुक्षू खींचे आरी ॥ ६/१/३/५

सन्त

सन्त चरण रज पाय कर, गंगा निरमल होय ।
सन्त आस देवन करें, सन्त पूज्य वर सोय ॥ ३/८/२९

सन्त न होते जगत मे, को जानत भगवान ।
कीट श्वान सम बीतता, जीवन मनुज महान ॥ ३/८/३३

योगी

जिन जीता मन पवन को, योगी ताको जान ।
औरो सर्व विडम्बना, धोखा कर्म पिछान ॥ १/१०/३७

अन्य

मानव शक्तिक बाहरे, जगत काम कोइ नाहि ।
बाहर है सो पुरुष का, सर्व शक्ति जेहि माहि ॥ ३/२/३३

अहार निंद के अल्प में, दृढ़ होय अभ्यास ।
निश्चय नियम विलास में, वर्द्धत विमल विकाश ॥ १/३/६

मर कर फिर मरना नहीं, उत्तम मरण कहाय ।
देह त्याग सोइ मरण है, त्याग समाधि लगाय ॥ ३/१/७

कर विचार मैं कौन हूँ, ब्रह्म को जगदाधार ।
कैसे जग उत्पन्न है, लीन कौन विधि पार ॥ ६/६/७२

चक्षु के चेतन करण को, एक में लेहु मिलाए ।
उर्ध्व भूमि को चढ़ि सको, अन्य न कोइ उपाए ॥ १/४/३०

कुण्डलिनी स्थिर रहे, डंड ऊपरी भाग ।
फन सो सुषमन रन्ध्र को, बन्द किये रह लाग ॥ १/३/१५

हीरा श्वाँस अमूल्य है, सर्व भजन में लाव ।
व्यर्थ विषय मत खोड़िये, प्रभु के शरण समाव ॥ १/३/३७